इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी, भारत अध्ययन केन्द्र और संगीत एवं मंचकला संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय "ध्रुपद-महोत्सव- 2017" का संक्षिप्त विवरण

(दिनांक 9 से 11 नवम्बर, 2017)

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र भारतीय शास्त्रीय एवं लोक संगीत की समृद्ध विरासत के संरक्षण एवं सम्वर्धन के लिए निरन्तर प्रयासरत है। क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी द्वारा विगत वर्षों में आयोजित किए गए अनेकों कार्यक्रमों की श्रृंखला में ध्रुपद महोत्सव का आयोजन एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिसका उद्देश्य इस विधा के ख्यातिप्राप्त कलाकारों के साथ-साथ उदीयमान कलाकारों को एक मंच प्रदान करना है। इसी लक्ष्य की सम्पूर्ति हेतु दिनांक 9 से 11 नवम्बर, 2017 तक ध्रुपद महोत्सव का आयोजन किया गया। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी, भारत अध्ययन केन्द्र और संगीत एवं मंचकला

संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय ध्रुपद-महोत्सव का शुभारम्भ पं० ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, संगीत एवं मंचकला संकाय का०हि०वि०वि० में दिनांक 9 नवम्बर, 2017 को अपराह्न 2.30 बजे काशीनरेश महाराजश्री डॉ० अनन्त नारायण सिंह जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम महाराजश्री काशीनरेश, पं० ऋत्विक सान्याल, प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी, डॉ० विजय शंकर शुक्ल तथा डॉ० के० शशिकुमार ने माँ सरस्वती जी, पं० मदनमोहन मालवीय जी एवं पं० ओंकारनाथ ठाकुर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया। संकाय की परम्परानुसार संकाय की छात्राओं द्वारा कुलगीत की भव्य प्रस्तुति हुई।

डॉ० विजय शंकर शुक्ल, क्षेत्रीय निदेशक, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संगीत के क्षेत्र में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा किये जा रहे विविध योगदानों की चर्चा की।

मुख्य अतिथि महाराजश्री काशीनरेशजी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग है इसको अधिक से अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए। उन्होंने कलाकारों से निवेदन किया कि वे अप्रचलित रागों, बन्दिशों एवं विधाओं पर विशेष पहल करें ताकि उनका संरक्षण एवं सम्वर्धन किया जा सके और संगीत जगत लाभान्वित हो सके।

उन्होंने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बहुआयामी प्रयासों की सराहना की तथा संगीत के अन्य विधाओं के संरक्षण पर भी जोर दिया और कहा कि ध्रुपद की भाँति ख्याल, ठुमरी, टप्पा आदि अन्य गेय विधाओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है। इसी के साथ महाराजश्री ने पद्मविभूषण विदुषी गिरिजा देवीजी के सम्मान में एक वृहत् कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया। अपने संक्षिप्त अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रख्यात ध्रुपद गायक पं० ऋत्विक सान्याल ने ध्रुपद को ध्रुव और पद में विश्लेषित करते हुए ध्रुपद के विविध आयामों पर प्रकाश डाला।

दिनांक 9 नवम्बर को ध्रुपद महोत्सव की प्रथम प्रस्तुति का प्रारम्भ खैरागढ़ से पधारी श्रीमती सोमबाला कुमार द्वारा राग भीमपलासी में आलाप, जोड़, झाला से हुआ। आपने ताल चौताल में "कुंजन में रचो रास, अद्भुत गत लियो गोपाल" बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की। तत्पश्चात् सूलताल में निबद्ध रचना "कैसे निठुर श्याम बिसार गयो धाम" की सुन्दर प्रस्तुति की। आपके साथ पखावज पर पं० पृथ्वीराज कुमार तथा सारंगी पर श्री अनीश मिश्र ने कुशल संगति की। तानपुरा पर संकाय की छात्रा अंजली वर्मा और गीतिका कुमारी ने सहयोग दिया।

द्वितीय प्रस्तुति मुम्बई से पधारे पं० पुष्पराज कोष्टी ने सुरबहार वादन से की। आपने राग हँसकिंकिणी में आलाप, जोड़, झाला के पश्चात् चारताल में निबद्ध गत की हृदयस्पर्शी प्रस्तुति से सुरबहार के तारों संग सुधी श्रोताओं के तन-मन को झंकृत कर दिया। आपके साथ पखावज पर पं० डालचन्द शर्मा ने सधी हुई संगति की। तानपुरे पर सम्प्रिति दासगुप्ता ने सहयोग दिया।

तृतीय प्रस्तुति में पुणे से पधारे विख्यात एवं लोकप्रिय ध्रुपद गायक पं० उदय भवालकर ने राग श्रीराग तथा ताल चारताल में आलाप, जोड़, झाला के माध्यम से खूबसूरत समाँ बाँधा। फिर आपने सूलताल में भी सुन्दर प्रस्तुति दी। आपने डागर परम्परा में विशेष

कीर्तिमान स्थापित किया है। आपके साथ पखावज पर पुणे के युवा पखावज वादक श्री प्रताप अवाड ने सधी हुई संगति की। तानपूरे पर सियाराम तथा धीरज शर्मा ने सहयोग दिया।

प्रथम दिन के आयोजन पर धन्यवाद ज्ञापन संकाय प्रमुख प्रो० के० शशिकुमार ने किया तथा सञ्चालन सुश्री ज्योति सिंह ने किया।

द्वितीय दिवस दिनांक 10.11.2017 को अपराह्न 3.00 बजे ध्रुपद गायन का प्रथम पुष्प भोपाल से पधारे विख्यात ध्रुपद गायक पद्मश्री गुन्देचा बन्धु (पं० रमाकान्त गुन्देचा और पं० उमाकान्त गुन्देचा) ने अर्पित की। आप दोनों भाइयों ने आलाप, जोड़ एवं झाला के माध्यम से अपनी खूबसूरत प्रस्तुति में चार-चाँद लगाया और अपनी चिर-परिचित डागर परम्परा को जीवन्त किया। आपने राग मुल्तानी तथा ताल चारताल में निबद्ध बन्दिश "वंशीधर पिनाकधर" और ताल सूलताल में "देवी दयानी" की सुमधुर प्रस्तुति दी। आपके साथ पखावज पर श्री अंकित पारिख ने सुन्दर संगति की। तानपूरे पर पूर्णिमा झा एवं अंजली वर्मा ने सहयोग दिया।

द्वितीय प्रस्तुति में खैरागढ़ से पधारे पं० पृथ्वीराज कुमार ने पखावज पर स्वतन्त्र वादन किया। आपने चारताल में उठान, प्रस्तार, परण, फरमाइशी, कमाली, लपेट, लड़ी, रेला आदि की प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुति दी। आपके साथ सारंगी पर काशी के प्रसिद्ध सारंगी वादक पं० सन्तोष कुमार मिश्र ने कुशल सहयोग दिया।

तृतीय प्रस्तुति इलाहाबाद के विशाल जैन ने दी। आपने राग जोगकौंस में आलाप, जोड़ एवं झाला की मधुर प्रस्तुति दी। फिर ताल चारताल में निबद्ध रचना “माई री आज को दिन” तथा ताल सूलताल में निबद्ध नायक बक्शू की रचना “जी में बात है”। राग भूपाली एवं ताल चारताल में निबद्ध बन्दिश “बरसत घटा” तथा ताल सूलताल में निबद्ध रचना “तेरो मन में कितनो गुण रे” की सुमधुर प्रस्तुति दी। आपके साथ पखावज पर भोपाल से पधारे प्रसिद्ध पखावजी पं० अखिलेश गुन्देचा ने प्रभावशाली संगति की। सारंगी पर लखनऊ से आए श्री अनीश मिश्र ने सुन्दर संगति की। तानपूरे पर ऋषभ चतुर्वेदी एवं धीरज शर्मा ने सहयोग दिया।

धन्यवाद ज्ञापन प्रो० रेवती साकलकर तथा सञ्चालन सुश्री ज्योति सिंह ने किया।

तृतीय दिवस दिनांक 11.11.2017 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी, भारत अध्ययन केन्द्र और संगीत एवं मंचकला संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय ध्रुपद-महोत्सव का समापन सत्र अपराह्न 3.00 बजे पं० ओंकार नाथ ठाकुर प्रेक्षागृह, संगीत एवं मंचकला संकाय का०हि०वि०वि० में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानन्द जोशी की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० चित्तरंजन ज्योतिषी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

प्रो० सदाशिव द्विवेदी, समन्वयक भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने अतिथियों का स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ० जोशी ने कहा कि यह कार्यक्रम नियमित रूप से चलता रहेगा तथा इसमें कुछ और सांगीतिक गतिविधियाँ जुड़ेंगी। उन्होंने कहा कि कलाओं को जीवन्त रखना हम सभी का दायित्व है। काशी कलाओं एवं कलाकारों का केन्द्र है जिन्हें धरोहर के रूप में विश्व पटल पर पहुँचाने हेतु हर सम्भव प्रयास किया जायेगा। मुख्य अतिथि प्रो० ज्योतिषी ने ध्रुपद के दोनों पक्षों प्रयोग एवं शास्त्र पर प्रकाश डाला।

ध्रुपद गायन का शुभारम्भ कोलकाता से पधारी विख्यात ध्रुपद गायिका प्रो० कावेरी कर के गायन से हुआ। आप ने राग भीमपलासी में आलाप, जोड़ एवं झाला प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् ताल चारताल में "कुंजन में रचो रास" एवं ताल सूलताल में निबद्ध रचना "अब गुण गुणीजन कृपाकर करतार" तथा राग श्री में धमार "सँवारो खेल रह्यो है" प्रस्तुत की। आपके साथ पखावज पर अंकित पारिख ने सुन्दर संगति की। तानपूरे पर सौम्या सोनकर तथा शालिनी शेखर ने सहयोग दिया।

द्वितीय प्रस्तुति में दिल्ली से पधारे पं० रविशंकर उपाध्याय ने पखावज पर स्वतन्त्र वादन प्रस्तुत किया। आपने ताल चारताल में गणेश-स्तुति, तिहाई, परण, पढ़न्त, रेला आदि को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। अपनी पारम्परिक बन्दिशों को जोरदार ढंग से प्रस्तुत कर प्रशंसा प्राप्त की। आपके साथ सारंगी पर काशी के प्रसिद्ध सारंगी वादक पं० सन्तोष कुमार मिश्र ने लाजवाब सहयोग दिया।

तृतीय प्रस्तुति में ख्यातिप्राप्त ध्रुपद गायक काशीवासी पं० ऋत्विक सान्याल ने आलाप, जोड़, झाला के माध्यम से खूबसूरत समाँ बाँधा। आपने राग जोग जिसे डागर परम्परा में "चलनाट" कहते हैं तथा ताल चारताल में निबद्ध रचना "प्यारी तोरे नैनन लीन कर लिने" की अद्भुत भावचित्र प्रस्तुत की तथा आपने सूलताल में स्वरचित रचना "जोगीवर शिव राग जोग श्रुति ज्ञान" की सुन्दर प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् राग दरबारी में धमार "सजन बिन खेलत मद विरहन होरी" की हृदयस्पर्शी प्रस्तुति दी। आपके साथ पखावज पर प्रसिद्ध पखावजी पं० डालचन्द शर्मा ने प्रभावशाली संगत की। तानपूरे पर आशीष जायसवाल, अनुराधा रतूड़ी एवं धीरज शर्मा ने सहयोग दिया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ० विजय शंकर शुक्ल ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा सुश्री अनुराधा रतूड़ी ने सञ्चालन किया।

इस त्रिदिवसीय ध्रुपद महोत्सव में डॉ० सच्चिदानन्द जोशी, प्रो० के० डी० त्रिपाठी, डॉ० विजय शंकर शुक्ल, डॉ० विश्वनाथ पाण्डेय, प्रो० सदाशिव द्विवेदी, प्रो० वनमाला पर्वतकर, श्री संजय सिंह, श्री गौतम चटर्जी, डॉ० प्रेम नारायण सिंह, श्री अशोक कपूर, डॉ० सुबाषचन्द्र यादव, डॉ० नरेन्द्रदत्त तिवारी, डॉ० रमा दुबे, डॉ० रजनीकान्त त्रिपाठी, डॉ० त्रिलोचन प्रधान, प्रो० शारदा वेलंकर, प्रो० रेवती साकलकर, प्रो० संगीता पण्डित, प्रो० राजेश साह, डॉ० विधि नागर, प्रो० प्रवीन उद्धव, प्रो० संगीता सिंह, डॉ० विजय कपूर, डॉ० मधुमिता भट्टाचार्य, डॉ० रामशंकर, डॉ० अम्बरीश चंचल आदि गुणी कला मर्मज्ञों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।